Research Papers

आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध साहित्य का पुनर्मूल्यांकन

डॉ. जिभाऊ शा. मोरे
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग , के. जे. सोमैया महाविद्यालय,कोपरगाँव
जिला — अहमदनगर (महाराष्ट्र)

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्थान शीर्षस्थ है। आचार्य द्विवेदीजी एक कालजयी साहित्यिक थे। सन २००७ उनका जन्मशताब्दी वर्ष था। इस दौरान उनके समग्र साहित्य पर देश भर में कई संगोष्ठियों और परिसंवादों का आयोजन हुआ था। इन आयोजनों में उनके समग्र साहित्य का पुनर्मूल्यांकन किया गया। प्रस्तुत शोधालेख इसीतरह का एक प्रयास है। आचार्य द्विवेदीजी एक बहुआयामी व्यक्ति और साहित्यकार रहे। पद्य को यदि छोडे तो शोध, आलोचना, इतिहास, और निबंध आदि गद्य की लगभग हर विधा में उन्होंने अपनी उर्वर प्रतिभा कमाल दिखाया है। हिंदी शोध और आलोचना के क्षेत्र में उन्होंने नवीन प्रतिमान स्थापित किए। उनके द्वारा विरचित- 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'सूर साहित्य', 'कबीर', 'नाथ संप्रदाय', 'हिंदी साहित्य की भूमिका' आदि ग्रंथ आज भी उनके महत् आलोचना-कर्म की साक्ष देते हैं। इसके अलावा हिंदी साहित्य जगत में एक मूर्धन्य निबंधकार के रूप में द्विवेदीजी अधिक लोकप्रिय हैं। जो गरिमा हिंदी संसार को उनके निबंधों से प्राप्त हुई है, वह कदाचित अन्य रचनाओं से नहीं। वे मुझे एक निबंधकार के रूप में ही हमेशा आकर्षित करते रहे हैं। शायद इसलिए कि विद्यार्थी-दशा में और बाद में अध्यापकी के दौरान पाठयक्रम में निर्धारित पुस्तकों में उनका कोई न कोई निबंध हमें नित्य बाँधकर रखता आया है। फिर वह 'कुटज' हो या 'नाखून क्यों बढते हैं?', 'अशोक के फूल' हो या 'देवदारू'। ये और इसतरह के अनेक निबंध द्विवेदीजी की निबंध कला के बेजोड उदाहरण हैं। यही कारण है कि मैंने प्रस्तुत शोधालेख हेतु इस विषय का चयन किया है।

आचार्य द्विवेदीजी ने अपने जीवन काल में शोधपरक, आलोचनात्मक, ललित(वैयक्तिक), साहित्यिक, सांस्कृतिक, भाषा वैज्ञानिक, धर्म और नीति संबंधी, शास्त्रीय, ज्योतिष आदि सभी प्रकार के दो सौ से अधिक निबंधों का सृजन किया है। उनके निबंध-'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'विचार प्रवाह', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'कल्पलता', 'साहित्य का अर्थ', 'साहित्य का साथी', 'आलोक पर्व', 'गतिशील चिंतन', 'मध्यकालीन धर्म-साधना', 'कुटज', 'चुने हुए निबंध', 'भाषा साहित्य और देश' आदि ग्रंथो में संगृहीत हैं। विषय की दृष्टि से इनके निबंधों को निम्न वर्गों में रखा जा सकता है -

१. साहित्यपरक निबंध : जैसे- 'साहित्य की संप्रेषणीयता', 'साहित्य निर्माण का लक्ष्य', 'साहित्य का नया रास्ता', 'इतिहास का सत्य', 'मनुष्य सर्वोत्तम साहित्य', 'साहित्य का नयाकरण', 'साहित्यकारों का दायित्व', 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है', 'साहित्य की मौलिकता का प्रश्न', 'भाषा, साहित्य और देश', 'हिंदी भाषा और साहित्य के विगत पच्चीस वर्ष', 'आधुनिक लेखकों का उत्तरदायित्व', 'हिंदी में उच्यस्तरीय पुस्तकें' आदि।

२. संस्कृति और सभ्यतापरक निबंध : जैसे- 'हमारी संस्कृति और साहित्य का संबंध', 'हिंदी संस्कृति के अध्ययन के उपादान', ' संस्कृतियों का संगम', 'हमारी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली', 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या', 'भारतीय संस्कृति की दैन', 'भारतीय चिंतनधारा : साहित्य के क्षेत्र में', 'भारतीय संस्कृति', 'स्वराज्य और स्वभाषा', 'जन गण मन अधि नायक जय हे', 'भारतीय मेले', 'दीपावली:सामाजिक मंगलेच्छा का प्रतिभा पर्व', 'घर जोडने की माया', 'प्रायश्चित की घडी' आदि निबंधों का समावेश किया जा सकता है।

३. आलोचनात्मक और शोधपरक निबंध : जैसे- 'काव्यकला', 'वैष्णव कवियों की रूपोपासना', 'मधुर रस की साधना', 'महिलाओं की लिखी कहानियाँ', 'आदिकाल के अंतरप्रांतीय साहित्य का ऐतिहासिक महत्व', 'हिंदी तथा अन्य भाषाएँ', 'हिंदी में शोध का प्रश्न', 'हिंदी शोधकार्य', 'उच्च शिक्षा', 'संत कवि दादू', 'रामचरितमानस : दिव्य प्रेरणा की अप्रतिम कृति', 'मधुराचार्य और उनका सुंदरमणि संदर्भ' आदि निबंधों का समावेश किया जा सकता है।

४. ललित या वैयक्तिक निबंध : जैसे- 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'नाखून क्यों बढते हैं?', 'देवदारू', 'आम फिर बौरा गए', 'ठाकुरजी की बटोर', 'बसंत आ गया', 'शिरीष के फूल', 'मेरी जन्मभूमि', 'क्या आपने मेरी रचना पढी ?', 'एक कुत्ता एक मैना', 'व्योमकेश शास्त्री उर्फ हजारीप्रसाद द्विवेदी', 'हिमालय', 'क्या निराश हुआ जाय?', 'बरसो भी' आदि उनके श्रेष्ठ ललित निबंधों के उदाहरण हैं। उनके इसीप्रकार के निबंध मुझे अधिक प्रिय हैं। द्विवेदीजी के ललित निबंधों का वैशिष्टय यह है कि वे गंभीर से लेकर अत्यंत मामूली विषयों से भी संबंधित है। ऐसा प्रतीत होता है की आचार्य द्विवेदीजी का व्यक्तित्व नके ललित निबंधों में ही अधिक खुलकर सामने आया है। इन निबंधों में उनकी कल्पना ने कई उड़ाने भरी हैं, वह अबाध गति से विचरण करती प्रतीत होती है। कोई छोटी-सी बात या मामुली दृश्य या निर्व्याज प्रश्न भी इनके निबंध के लिए काफी होते हैं, जिसे लेकर ये अपने-निबंधों में बड़ी से बड़ी और गंभीर बात कह देते हैं। 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'कल्पलता', 'नाखून क्यों बढते हैं?','देवदारू', 'शिरीष के फूल', 'ठाकुरजी की बटोर', 'क्या अपने मेरी रचना पढ़ी' आदि आपके बेजोड़ ललित निबंध हैं।

'नाखून क्यों बढते हैं?' में द्विवेदीजी ने बालक की एक सामान्य जिज्ञासा के माध्यम से एक ज्वलंत प्रश्न को उपस्थित किया है। वह यह कि मनुष्य का मनुष्यत्व क्या है? और पशुत्व क्या है? इस निबंध को पढकर यह समझा जा सकता है कि कैसे वर्तमान सभ्यता के पीछे हिंसा और युध्द की बर्बरता छिपी है। ऐसे ही 'कुटज' निबंध का उदाहरण लिया जा सकता है। कुटज के रूप में एक सामान्य पहाडी पौधे को अपने निबंध का विषय बनाकर उसके माध्यम से द्विवेदीजी मनुष्य मात्र की जिजीविषा की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हैं। इस निबंध से उनका आशावाद, फक्कड़पन, प्रगतिशीलता, प्रकृति के प्रति नितांत लगाव के मनोरम दर्शन होते हैं। कुटज का परिचय कराते हुए निबंधकार लिखता है - "शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कुराते हुए ये वृक्ष द्वंद्वातीत हैं, अलमस्त हैं।"[१]

श्री. विश्वंभर मानव ने ठीक ही लिखा है – "जैसे काव्य और नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद, कथा-साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद, आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वैसे ही

ललित निबंधों के क्षेत्र में पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी आजतक के लेखकों में सर्वश्रेष्ठ हैं।... अपने गाँव से लेकर पशु-पक्षी, फूल-पौधों, कला-शिल्प, ज्योतिष –इतिहास, वेद और ब्रहमांड के विस्तार तक जिस विषय को भी इन्होंने छुआ है, उसे ही एक प्रकार के अनुपम आलोक से जगमगा दिया है।... "[२] इस बात में कोई संदेह नहीं कि संस्कृति और सभ्यतापरक निबंध द्विवेदीजी की अक्षय कीर्ति के स्तंभ हैं। इन निबंधों से उनका संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि। भाषाओं तथा उनमें रचित साहित्य का गहन ज्ञान और पांडित्य के दर्शन तो होते ही हैं, साथ ही हमें भारतीय संस्कृति की उज्जवल परंपरा से वे परिचित कराते हैं। यद्यपि भारत की संस्कृति पर उनकी अगाध निष्ठा है। तथापि संस्कृति को व्यापक अर्थ में देखते-समझते हैं। द्विवेदीजी संस्कृति को किसी एक देश की मिलकीयत नहीं मानते, बल्कि समस्त संसार के मनुष्यों की एक ही सामान्य मानव संस्कृति की कल्पना कर विश्वबंधुत्व और विश्व मानवता का संदेश देते हैं। उनके मन से अगर मानव परस्पर भेद भूलकर इस एक संस्कृति के अनुयायी बन जाय तो संघर्ष के सारे कारण समाप्त हो जाएँगे। जहाँ एक ओर वे भारतीय संस्कृति की प्राचीन गरिमा, महत्ता, उदारता, सहिष्णुता में आस्था रखते हैं, वही दूसरी ओर उसमें व्याप्त कुसंस्कार, क्षुद्रता और भेद-नीति का तिरस्कार भी करते हैं। क्योंकि उनके समस्त साहित्य का केंद्र -'मनुष्य' है। अत: उनकी दृष्टि में मनुष्य से बढ़कर अन्य कोई वस्तु नहीं है। 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है' शीर्षक निबंध उन्होंने उक्त मान्यता के प्रतिपादन के लिए ही लिखा हैं। भारतीय संस्कृति की देन निबंध में उन्होंने लिखा है – "सभ्यता के उष:काल से लेकर आधुनिक काल के आरंभ तक हमारे इस देश में नाना मानव-समूहों की धारा बराबर आती रही है।"[३]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है की वर्तमान समय के अमानवीकरण और विघटन इस युग में मानव-मूल्य, जीवन-मूल्य, (नैतिकता, इमानदारी, त्याग, निष्ठा आदि) स्मृतिशेष हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में आ. द्विवेदी का निबंध-साहित्य हमारा पथ-प्रदर्शन करता है। आधुनिक वैज्ञानिक और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में इनका निबंध-साहित्य अमानवीकरण और यांत्रिकीकरण के हमले से बचाकर परस्पर प्रेम-स्नेह, सौहार्द और भाई चारा बढ़ाकर पुनश्च विश्वबंधुत्व और विश्वमानवता का संचार कर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने में सहायक सिध्द हो सकता है।

"यद्यपि आचार्य द्विवेदी शुक्ल संस्थान के आलोचक हैं किन्तु वे अपने मानवतावाद, समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण के कारण उससे बिल्कुल विलग से हैं।"[४]

संदर्भ -

१. कुटज, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
२. हिंदी साहित्य का सर्वेक्षण, गद्य-खण्ड : विश्वंभर मानव
३. अशोक के फूल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
४. हिंदी साहित्य:युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा